प्रातः क्लास 22/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बच्चों अथवा आत्माओं प्रति बाप बैठ समझाते हैं। अपन को आत्मा तो समझना है ना। बाप ने बच्चों को समझाया है पहले-2 यह प्रैक्टिस करो कि हम आत्मा हैं, न कि शरीर। जब अपन को आत्मा समझेंगे तब ही परमपिता परमात्मा को याद कर सकेंगे। अपन को आत्मा न समझेंगे तो ज़रूर फिर लौकिक संबंधी, धंधा आदि ही याद आते रहेंगे। इसलिए पहले-2 तो यह प्रैक्टिस होनी चाहिए, हम आत्मा हैं तो फिर रूहानी बाप की याद ठहरेगी। बाप यही शिक्षा देते हैं अपन को देह न समझो। यह ज्ञान बाप एक ही बार सारे कल्प में देते हैं। फिर 5000 वर्ष बाद यह समझानी मिलेगी। अपन को आत्मा समझेंगे तो बाप ही याद आवेगा। आधा कल्प तुमने अपन को देह समझा है। अभी अपन को आत्मा समझना है। जैसे तुम आत्मा हो, मैं भी आत्मा ही हूँ; परंतु सुप्रीम हूँ। मैं हूँ ही आत्मा तो मुझे कोई देह याद पड़ते ही नहीं। यह दादा तो शरीरधारी है ना। वह बाप है निराकार। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो साकार हो गया। शिवबाबा का असली नाम शिव ही है। वह है ही आत्मा। सिर्फ वह ऊँच ते ऊँच अर्थात् सुप्रीम आत्मा है। सिर्फ इस समय ही आकर इस शरीर में प्रवेश करते हैं। वह कब देहअभिमानी हो न सके। देहअभिमानी साकारी मनुष्य होते हैं। वह तो है ही निराकार। उनको यह प्रैक्टिस करानी है। कहते हैं तुम अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, यह पाठ बैठ पढ़ो। मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ। आत्मा हूँ। यह पक्की प्रैक्टिस हो जाये। हर बात की प्रैक्टिस चाहिए ना। बाप कोई नई बात नहीं समझाते हैं। तुम जब अपन को आत्मा पक्का-2 समझेंगे तब पक्का बाप भी याद रहेगा। देहअभिमान रहेगा तो बाप को याद कर न सकेंगे। आधा कल्प तो देह का अहंकार रहता है। अभी तुमको सिखलाता हूँ तुम अपन को आत्मा समझो। सतयुग में ऐसे कोई सिखलाता नहीं है कि अपन को आत्मा समझो। शरीर पर नाम तो पड़ता ही है, नहीं तो एक/दो को बुलावें कैसे। यहाँ तुमने जो बाप से वर्सा पाया है, वही प्रारब्ध वहाँ पाते हो। बाकी बुलावेंगे तो नाम से ना। कृष्ण भी शरीर का नाम है ना। नाम बिगर तो कारोबार आदि चल न सके। ऐसे नहीं कि वहाँ भी कहेंगे अपन को आत्मा समझो। वहाँ तुम कोई आत्माअभिमानी हो रहते हो, ऐसे भी नहीं है। यह प्रैक्टिस तुमको अभी कराई जाती है; क्योंकि पाप बहुत सिर पर चढ़े हुये हैं। आस्ते-2 थोड़ा-2 पाप चढ़ते-2 अभी फुल पाप आत्मा बन पड़े हो। आधा कल्प के लिए जो जमा किया है वह खलास भी तो होगा ना। आस्ते-2 कम (हो) जाता है। सतयुग में तुम सतोप्रधान, त्रेता में सतो बन जाते हो। वर्सा अभी मिलता है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही वर्सा मिलता है। देही अभिमानी बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं। सतयुग में यह शिक्षा नहीं मिलती। अपने-2 नाम पर ही चलते हैं। यहाँ तुम हरेक को पापात्मा से पुण्यात्मा बनना है। याद की बल से ही पुण्यात्मा बनेंगे। सतयुग में इस शिक्षा की दरकार है नहीं। न यह शिक्षा ले जाते हो। वहाँ न यह ज्ञान, न योग ले जाते हैं। तुमको पतित से पावन अभी ही बनना है। फिर आस्ते-2 कला कम होती है। जैसे चन्द्रमा की कला कम होते-2 लीक जाकर रहती है। तो इसमें मूँझो नहीं। कुछ भी न समझो तो बाप से पूछो। पहले तो यह पक्का निश्चय करो हम आत्मा हैं। तुम्हारी आत्मा ही अभी तमोप्रधान बनी है। पहले सतोप्रधान थी। फिर दिन-प्रतिदिन कला कम होती जाती है। मैं आत्मा हूँ, यह पक्का न होने से ही तुम बाप को भूलते हो। पहले-2 मूल बात ही यह है आत्म-अभिमानी बनना पड़े। फिर बाप भी याद आवेगा। बाप याद आवेगा तो वर्सा भी याद आवेगा। वर्सा याद आवेगा तो पवित्र भी रहेंगे। दैवीगुण भी रहेंगे। एम ऑबजेक्ट तो सामने हैं ना। यह है गॉडली युनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं। देहीअभिमानी भी वही बना सकते हैं और कोई यह हुनर जानता ही नहीं। एक बाप ही सिखलाते हैं। यह दादा भी पुरुषार्थ करते हैं। बाप तो कब देह लेते ही नहीं जो उनको देही अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करना पड़े। वह सिर्फ इस समय ही आते हैं तुमको देहीअभिमानी बनाने। यह भी कहावत है जिनके माथे मामला..... बहुत धंधा आदि टूमच होता है

तो फुर्सत नहीं मिलती और जिनको फुर्सत है वह आते हैं बाबा के सामने पुरुषार्थ करने। कोई नये-2 भी आते हैं। समझते हैं नॉलेज तो बड़ी अच्छी है। गीता में भी यह अक्षर है मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। तो बाप यह समझाते हैं। बाप कोई को दोष नहीं देते हैं। यह तो जानते हैं, तुमको पावन से पतित बनना ही है और हमको आकर पतित से पावन बनाना ही है। यह बना बनाया ड्रामा है। वह सभी गुरु लोग तुमको डुबाते हैं, मैं तुमको पार करता हूँ। वह तो अपन को भगवान कह अपनी पूजा बैठ कराते हैं। उनको हिरण्यकश्यिप कहा जाता है। यह तो अनादि बना बनाया खेल है। इसमें कोई की निन्दा की बात ही नहीं। अभी तुमको ज्ञान मिला है तो ड्रामा अच्छा लगना चाहिए। कैसा वण्डरफुल नाटक है! कितने एक्टर्स हैं! आत्माएँ कितने छोटे-2 हैं! हरेक में पार्ट नुँधा हुआ है। यह समझाने की बात है। ग्लानि की बात नहीं। शंकराचार्य बैठ अपनी पूजा कराते हैं, यह तो रांग है ना। इससे ही मनुष्य पतित बनते हैं। यह समझाया जाता है, बाकी ग्लानि की कोई बात नहीं। तुम अभी ज्ञान को अच्छी रीत जानते हो। और तो कोई नहीं जानता। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। और कोई में ज्ञान है नहीं। कोई भी ईश्वर को जानते ही नहीं। इसलिए निधणके नास्तिक कहलाये जाते हैं। अभी बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं। टीचर रूप में बैठ शिक्षा देते हैं, कैसे यह सृष्टि का चक्र फिरता है। यह शिक्षा मिलने से तुम भी सुधरते हो। भारत जो शिवालय था सो अभी वैश्यालय है ना। इसमें ग्लानि की कोई बात नहीं। यह खेल है जो बाप समझाते हैं। तुम देवता से असुर कैसे बने हो? ऐसे नहीं कहते क्यों बने? बाप आये ही हैं बच्चों को अपना परिचय देने और सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, यह नॉलेज देते हैं। मनुष्य ही जानेंगे ना। अभी तुम जानकर फिर देवता बनते हो। यह पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनने की, जो बाप ही बैठ पढ़ाते हैं। यहाँ तो सभी मनुष्य ही मनुष्य हैं। देवताएँ तो इस सृष्टि पर आ भी न सके, जो टीचर बन पढ़ावें। पढ़ाने वाला बाप देखो कैसे आते हैं! गायन भी है परमपिता-परमात्मा कोई रथ लेते हैं। यह पूरा दिखाते नहीं कौन सा रथ लेते हैं। त्रिमूर्ति का राज़ भी कोई समझते नहीं। बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा..... मैं कौन हूँ? परम आत्मा अर्थात् परमात्मा हूँ। जो जो हैं सो अपना परिचय तो देंगे ना। अहंकार की बात नहीं। यह तो कहते नहीं कि मैं परमात्मा हूँ। यह तो समझ की बात है ना। यह तो परमात्मा के महावाक्य हैं, सभी आत्माओं का बाप एक है। इनको तो दादा कहा जाता है। यह भाग्यशाली रथ है। नाम भी ब्रह्मा रखा है; क्योंकि ब्राह्मण चाहिए ना। आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा (था)। प्रजापिता नाम है ना। प्रजा का पिता। अभी प्रजा कौन सी है? प्रजापिता ब्रह्मा शरीरधारी है तो एडॉप्ट किया है बच्चों को। शिवबाबा समझाते हैं मैं एडॉप्ट नहीं करता हूँ। तुम सभी आत्माएँ तो सदैव मेरे बच्चे हो ही। मैं तुमको बनाता नहीं हूँ। मैं तो तुम आत्माओं का अनादि अविनाशी बाप हूँ। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी कहते हैं अपन को आत्मा समझो। तुम पुरानी दुनिया का सन्यास करते हो बुद्धि से। जानते हैं सभी वापस जावेंगे इस दुनिया से। ऐसे नहीं सन्यास कर जंगल में जाना है। सारी दुनिया का सन्यास (कर) हम अपने घर चले जावेंगे। इसलिए कोई भी चीज़ याद न आवे, सिवाय एक बाप के। 60वर्ष की आयु हुई तो बस फिर वाणी से परे, वानप्रस्थ जाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। यह वानप्रस्थ की बात है अभी की। भक्तिमार्ग में तो वानप्रस्थ का किसको भी पता नहीं है। वानप्रस्थ का अर्थ नहीं बता सकते हैं। वाणी से परे मूलवतन को कहेंगे, जहाँ सभी आत्माएँ निवास करती हैं, जिसको ब्रह्माण्ड कहते हैं। तो अभी सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। सभी को जाना है घर। वह है आत्माओं का घर। शास्त्रों में दिखाते हैं आत्मा अँगुष्ठे मिसल है। फिर भी कहते हैं भृकुटि के बीच सितारा चमकता है। तब क्या समझें? अंगुष्ठे मिसल को ही याद करते हैं। स्टार को याद कैसे करें, पूजा कैसे करें? तो बाप समझाते हैं तुम देहअभिमान में जब आते हो तो पुजारी बन जाते हो। भक्ति का समय शुरू होता है, जिसको भक्ति कल्ट कहते हैं। ज्ञान कल्ट अलग है। ज्ञान और भक्ति इकट्ठी नहीं हो सकती। दिन और रात इकट्ठे नहीं हो सकते। दिन को सुख, रात को दुःख कहा जाता है।

कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का दिन। फिर रात। तो प्रजा और ब्रह्मा दोनों ज़रूर इकट्ठे ही होंगे। तुम समझते हो हम ब्राह्मण ही आधा कल्प सुख भोगते हैं, फिर आधा कल्प दुख। यह बुद्धि से समझने की बातें हैं। यह भी तुम जानते हो, सभी बाप को याद नहीं करते। फिर बाप भी खुद समझाते रहते हैं अपन को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह पैगा(म) सभी को पहुँचाना है। सर्विस करनी है। जो सर्विस ही नहीं करते हैं तो वह फूल नहीं ठहरे ना। बागवान बगीचे में आवेंगे तो उनको फूल ही सामने चाहिए जो सर्विसएबुल हो। बहुतों का कल्याण करते हैं। जिनको देहअभिमान है वह खुद भी समझेंगे हम फूल तो हैं नहीं। बाबा के सामने तो अच्छे-2 फूल बैठे तो बाप की उन पर नज़र जावेगी। डांस भी अच्छा ...लेगा। (डांसिंग गर्ल का मिसाल) स्कूल में भी टीचर तो जानते हैं कौन नम्बरवन, कौन नम्बर टू, थ्री में हैं। बाबा भी(की) अटेंशन सर्विस करने वालों तरफ ही जावेंगी। दिल पर भी वह चढ़ते हैं। डिस-सर्विस करने वाले थोड़े ही दिल पर चढ़ते हैं। बाप पहली-2 मुख्य बात समझाते हैं अपन को आत्मा निश्चय करो तब बाप की याद ठहरेगी। देहअभिमान होगा तो बाप की याद ठहरेगी नहीं, लौकिक संबंधी तरफ, धंधो-धोरी तरफ बुद्धि चली जावेगी। देही अभिमानी होने से पारलौकिक बाप ही याद आवेगी। बाप को तो बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। अपन को आत्मा समझना, इसमें ही मेहनत है। एकांत चाहिए। सात रोज़ की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आये। किसको चिट्ठी नहीं लिख सकते। इसलिए कहा जाता है घर में रह कर प्रैक्टिस करो। भक्ति के लिए भक्त लोग भी अलग कोठरी बना देते हैं। अंदर कोठरी में बैठ माला सिमरते हैं। तो इस याद की यात्रा में भी एकांत चाहिए। एक बाप को ही याद करना है। इसमें कुछ ज़बान चलाने की बात नहीं। इस याद की अभ्यास में फुर्सत चाहिए। भक्तों को भी फुर्सत होती है तब तो अभ्यास करते हैं। सन्यासी भागकर जाकर जंगल में ब्रह्म को याद करते हैं। पवित्र रहते थे। विकारों का सन्यास करते थे। उन्हों का मार्ग ही ऐसा था। शुरू में भारत की सेवा करते थे। फिर अभी वह भी बिगड़ गये हैं। तमोप्रधान होने कारण वापस घर लौट आते हैं। मनुष्यों की कितनी अंधश्रद्धा होती है। जिन स्त्रियों को वह विधवा बना देते हैं फिर वह जब रजो तमो में आते हैं तो वही स्त्रियाँ उन्हों को अपना गुरु बनाये उन्हों की पूजा बैठ करती हैं। घर से बाप चला जाता है तो सभी उदास हो जाते हैं; क्योंकि बाप क्रियेटर है ना। यह है बेहद का। प्रजापिता ब्रह्मा तो बेहद का ठहरा ना। एडॉप्ट करते हैं। शिवबाबा एडॉप्ट नहीं करते हैं। उनके तो बच्चे सदैव हैं ही। तुम कहेंगे शिवबाबा के हम बच्चे आत्माएँ अनादि हैं ही। आत्माएँ रहती ही हैं ब्रह्म महतत्व में। तुमको एडॉप्ट किया गया है। हरेक बात अच्छी रीत समझने की है। बाप रोज़-2 बच्चों को समझाते हैं। कहते हैं—बाबा याद नहीं रहते हैं। बाप कहते हैं इसमें थोड़ा समय निकालना चाहिए। कोई-2 ऐसे होते हैं जो समय बिल्कुल दे नहीं सकते। बुद्धि में .....। फिर याद की यात्रा होवे कैसे? बाप समझाते हैं मूल बात ही यह है। अपन को आत्मा समझो। मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। मैं आत्मा हूँ। आत्मा हूँ। शिवबाबा का बच्चा हूँ। यह भी मन्मनाभव हुआ ना। इसमें मेहनत चाहिए, आशीर्वाद की बात नहीं। यह तो पढ़ाई है। इसमें कृपा वा आशीर्वाद नहीं चलती। मैं कब तुम्हारे पर हाथ रखता हूँ क्या? तुम जानते हो बेहद के बाप से हम वर्सा ले रहे हैं। अमरभव, आयुष्मान भव। इसमें सभी आ जाता है। तुम फुल एज पाते हो। वहाँ कब अकाले मृत्यु नहीं होता। यह वर्सा कोई साधु-संत आदि दे न सके। वह तो कहते हैं पुत्रवान भव। तो मनुष्य समझते हैं उनकी ही कृपा से बच्चा हुआ। बस। जिसको बच्चा न होगा वह जाकर उनका शिष्य बनेंगे। ज्ञान तो कुछ है नहीं। भक्ति में यह सभी बातें होती हैं। ज्ञान तो एक ही बार मिलता है। यह है अव्यभिचारी ज्ञान, जिसकी आधा कल्प प्रारब्ध चलती है। फिर है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। हरेक बात अच्छी रीत समझाई जाती है। इसमें कैरेक्टर्स बहुत अच्छी चाहिए। यह तो

रूहानी टीचर है। इनसे कुछ करेंगे तो अवस्था एकदम गिर पड़ेंगे। अपन को आपे ही घाटा डाल देंगे। पद भ्रष्ट हो जावेगा। तमोप्रधान से अभी सतोप्रधान बनना है। न बनेंगे तो नतीजा क्या होगा? रह जावेंगे। तमोप्रधान रह जावेंगे। आपे ही अपन को श्रापित करते हैं। फिर सज़ा के लायक बन जावेंगे। न पढ़ेंगे तो ज़रूर नापास हो जावेंगे। न पढ़ते हैं, दैवीगुण नहीं धारण करते हैं, तो अपना ही नुकसान कर देते हैं। सतोप्रधान कदाचित बन न सकेंगे। बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। डिस सर्विस करते हैं तो न अपना, न दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। बहुत बच्चे हैं जो बहुतों का कल्याण करते हैं। यज्ञ को बड़ी मदद देते हैं। भल ज्ञान इतना न है, किसको समझा नहीं सकते हैं; परंतु दिल बड़ी साफ है। जो कुछ कमाते हैं, कहते हैं शिवबाबा यह आपका है। बाबा भी कहते हैं 60वर्ष कमाई की है, अभी वानप्रस्थ लो। स्थूल कमाई छोड़ दो। बाप को याद करो। याद की यात्रा बहुत ज़रूरी है। सृष्टि को पवित्र बनाना है। धंधा आदि सभी छोड़ो। 60वर्ष के बाद वानप्रस्थ अवस्था हुई, तब बाप ने प्रवेश किया। बाप कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अंत में आकर हमने प्रवेश किया है और तुमको शिक्षा (दे) रहा हूँ। इसमें बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। ज़रा भी देहअभिमान न रहे। बड़ी मीठी अवस्था हो। फट फीटा नहीं होना है। जो डिस-सर्विस करते हैं वह तो अपना ही नुकसान करते हैं। डिस-सर्विस भी अपनी करते हैं। हर बात में समझ चाहिए। तुम जानते हो हम कैसे देवी-देवताएँ थे। अभी फिर बनना है। कल्प-2 हम ही बनते हैं। अभी जो जो जितना पुरुषार्थ करेंगे वह बनेंगे। लिखते हैं बाबा यह ज्ञान नहीं लेते हैं। डिस-सर्विस करते हैं। डिस-सर्विस करने वाले भी बहुत निकल पड़ते हैं। कुछ थोड़ा ही कहो तो कहेंगे मैं डिस-सर्विस करता हूँ। सभी को कहूँगा कि यह सभी गपोड़े हैं। अभी देखना हम क्या करते हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प तुम ऐसे अपना पद भ्रष्ट करते हो। बाकी स्थापना तो हो ही जाने का है। गुस्से में आते हैं तो फिर कह देते हैं, देखना हम क्या करते हैं। इनसे भी ऐसे करते हैं। यह भूल जाते हैं कि यह किसकी दरकार(दरबार) है। अवस्था और ढरक जाती है। सौणा दंड पड़ जाता है। सभी भूत आकर लग जाते हैं। यह जन्म-जन्मांतर के 5 भूत मनुष्यों के लगे हुये हैं। उनकी अवस्था को ही डाँवाडोल कर देते हैं। अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। बहुत डिससर्विस करते हैं। फिर एकदम गिर पड़ते हैं। सौणा दंड पड़ जाता है। बहुत सज़ा खाते हैं। इसमें बहुत मीठा, बहुत रमणीक होना चाहिए। बाप कितना कहते हैं बच्चे मीठे-मीठे बनो। अपन को आत्मा समझो। पहले नम्बर की अवज्ञा करते हैं बेहद के बाप की। उनको सर्वव्यापी कह देते। कुत्ते-बिल्ले, ठिक्कर-भित्तर में है। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, परशुराम अवतार लेते हैं। शिवबाबा कोई के तन में प्रवेश कर तलवार से मारते रहेंगे क्या? यह सभी हैं नॉनसेंस की बातें। नॉनसेंस बकते-2 तमोप्रधान बन पड़े हैं। तुम बच्चों को अभी पुरुषार्थ करना है। पहली-2 बात अपन को आत्मा समझो। देही अभिमानी बनना है। याद की यात्रा पर रहना है। याद की यात्रा से ही जाना है। आत्मा सभी से फास्ट रॉकेट है। है कितनी छोटी; परंतु सभी से तीखी जाती है। कितना तीखा रॉकेट है! सेकण्ड में एक शरीर से निकल दूसरे गर्भ में कहाँ का कहाँ जाकर प्रवेश करती है। चाहे विलायत में हो, चाहे कहाँ भी हो। इन बातों का मनुष्यों को पता नहीं है। आत्मा को सारा पार्ट मिला हुआ है। आत्मा ही शरीर धारण कर और पार्ट बजाती है। 84 जन्मों का पार्ट इतनी छोटी आत्मा में भरा हुआ है। तो तुम बच्चे कितने बड़े हो! भगवान तुमको पढ़ाते हैं। जो बहुत पापात्माएँ बन जाते हैं उन्हों को ही बाप आकर पुण्यात्मा बनाते हैं। यह नॉलेज भी सिर्फ अभी ही मिलती है। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि भगवान किसको कहा जाता है। तमोप्रधान बुद्धि होने कारण कह देते भगवान तो सर्वव्यापी है। बाप आकर आसुरी स्वभाव के पतित मनुष्यों को दैवी स्वभाव वाला देवता बनाते हैं। हरेक अपने दिल से पूछे हम क्या बन रहे हैं? अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।